।। धांवा ।।

उद्धरी गुरुराया। अनसुया-तनया दत्तात्रेया।।धृ.।।
जो अनसुयेच्च्या भावाला, भुलुनियां सुत झाला।।
दत्तात्रेया अशा नामाला, मिरवी वंद्य सुराला।।
तो तूं मुनिवर्या, निज पायां, स्मरतां वारिसी माया।।
उद्धरी गुरुराया।। १।।
जो माहुरपुरीं शयनकरी, सह्याद्रीचे शिखरी।।
निवसे, गंगेचे स्नान करी, भिक्षा कोल्हापुरी।।
स्मरता दर्शन दे, वारि भया, तो तूं आगमगेया।।
उद्धरी गुरुराया।। २।।
तो तूं वांझेसी, सुत देसी, सौभाग्या वाढविसी,
स्मरतां प्रेतासी जीवविसी, सद्वरदाना देसी।
यांस्तव वासुदेव तव पाया, धरि त्या तारी सदया।।
उद्धरी गुरुराया अनसुया-तनया दत्तात्रेया ।। ३।।